# अम्बालालजी महाराज अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०१२०३८)


मुख्य टाइटल

समर्पण

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड ---------------------------------------------------------------------------- १-८८

द्वितीय खण्ड

मेवाड़ और उसके दमकते हीरे

मेवाड़ – एक भौगोलिक विशेषण – डॉ. बसन्तसिंह -------------------------------------- ८९

मेवाड़ की लोक-संस्कृति में धार्मिकता के स्वर – डॉ. महेन्द्र भानावत -------------------- ९२

वीरों, सन्तों और भक्तों की भूमि-मेवाड़ – श्री हीरा मुनि --------------------------------- १००

मेवाड़ में जैन धर्म की प्राचीनता – रामवल्लभ सोमानी --------------------------------- १०५

मेवाड़ और जैन धर्म – श्री बलवन्तसिंह महेता ------------------------------------------ १०८

मैवाड़ राज्य की रक्षा में जैनियों का योगदान – डॉ. देव कोठारी --------------------------११३

परम्परा का इतिहास

मेवाड़ सम्प्रदाय के ज्योतिर्मय नक्षत्र – श्री सौभाग्य मुनि कुमुद ------------------------- १२४

घोर तपस्वी पूज्य श्री रोड़जी स्वामी ------------------------------------------------ १२६

आचार्य प्रवर श्री नृसिंहदासजी महाराज -------------------------------------------- १३८

पूज्य आचार्य श्री मानजी स्वामी ---------------------------------------------------- १४४

तपस्वीराज श्री सूरजमल जी महाराज---------------------------------------------- १५१

कविराज श्री रिषभदासजी महाराज ------------------------------------------------- १५३

श्री बालकृष्णजी महाराज ----------------------------------------------------------- १५६

कलाकार श्री गुलाबचन्द्रजी महाराज ----------------------------------------------- १६०

आत्मार्थी श्री वेणीचन्दजी महाराज ------------------------------------------------- १६१

आचार्य श्री एकलिंगदासजी महाराज ----------------------------------------------- १६३

पूज्य श्री मोतीलालजी महाराज ---------------------------------------------------- १६८

परमश्रद्धेय श्री जोधराजी महाराज ------------------------------------------------- १८०

सरल हृदय श्री भारमलजी महाराज ------------------------------------------------१८१

परम श्रद्धेय श्री मांगीलालजी महाराज ------------------------------------------- १८३

मेवाड़ सम्प्रदाय की साध्वी परम्परा ----------------------------------------------- १८७

प्रवर्तिनी श्री सरूपाजी और उनका परिवार ------------------------------------------ १९०

जैन साहित्य और संस्कृति की भूमि-मेवाड़ – डॉ. कस्तूरचंद कासलीवाल ----------------- १९४

मेवाड़ का प्राकृत, संस्कृत एवं अपभ्रंश साहित्य – डॉ. प्रेम सुमन जैन ------------------- १९९



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राचीन भारतीय मूर्तिकला को मेवाड़ की देन – डॉ. रत्नचन्द्र अग्रवाल -------------------- २०८
मेवाड़ा का एक जैन भील नेता-मोतीलाल तेजावत – श्री शोभालाल गुप्त ------------------ २१६
मेवाड़ में वीरवाल प्रवृत्ति – श्री नाथूलाल चण्डालिया ------------------------------------ २२०
स्वतन्त्रता संग्राम में मेवाड़ के जैनियों का योगदान – डॉ. भँवर सुराणा ------------------ २२३
तृतीय खण्ड – जैन तत्त्व विद्या
आत्मतत्त्व-एक विवेचन – डॉ. हुकमचन्द संगवे ------------------------------------------- २२५
कर्म-सिद्धान्त-मनन और मीमांसा – साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी ------------------------------- २३०
लेश्या-एक विवेचन – डॉ. महावीर राज मेलड़ा -------------------------------------------- २४१
गुणस्थान-विश्लेषण – डॉ. हिम्मतसिंह सरूपरिया ------------------------------------------ २४४
जिनशासन का हार्द – श्री सूरजचन्द शाह ----------------------------------------------- २५७
भारतीय चिन्तन में मोक्ष और मोक्षमार्ग – श्री देवेन्द्र मुनि --------------------------------- २५९
भगवान महावीर का तत्त्ववाद – मुनि श्री नथमलजी ---------------------------------------- २७०
आधुनिक विज्ञान और जैन मान्यताएँ – डॉ. नन्दलाल जैन -------------------------------- २७७
स्याद्वाद का सही अर्थ – प्रो. दलसुख मालवणीया ------------------------------------------ २८६
अनेकान्त दर्शन-अहिंसा की परमोपलब्धि – डॉ. अमरनाथ पाण्डेय -------------------------- २८७
आगमकालीन नय-निरूपण – श्रीचन्द गोलेच्छा ------------------------------------------- २८९
जैनागमों में मुक्ति-मार्ग और स्वरूप – मुनि श्री कन्हैयालालजी ------------------------------ २९८
ब्राह्मण व श्रमण परम्परा के सन्दर्भ में स्थितप्रज्ञ और वीतराग – श्री भँवरलाल सेठीया ------- ३२१
जैनदर्शन में अजीव द्रव्य – श्री आनन्द ऋषिजी ------------------------------------------- ३३६
चतुर्थ खण्ड – जैन साधना, साहित्य और संस्कृति
जैन साधना पद्धति – डॉ. मुक्ताप्रसाद पटैरिया ----------------------------------------------- ३३९
जैन योग-उद्गम, विकास, विश्लेषण तुलना – डॉ. छग्गनलाल शास्त्री --------------------------- ३४८
श्रमणाचार-एक अनुशीलन – आर्या चन्द्रावती ---------------------------------------------- ३६०
जैन साधना में तप के विविध रूप – गोटूलाल मांडोत ------------------------------------- ३७१
जैनश्रमण-वेशभूषा-एक तात्त्विक विवेचन – औंकारलाल सेठिया ----------------------------- ३८१
विश्व धर्मों के परिप्रेक्ष्य में जैन उपासक का साधना पथ-एक तुलनात्मक विवेचन –
बसन्तकुमार जैन शास्त्री ------------------------------------------------------------- ३८९
संलेखना-एक श्रेष्ठ मृत्युकला – मुनि श्री सौभाग्यमलजी -------------------------------------- ४०४
जैन परम्परा में उपाध्याय पद – मुनि श्री रूपचन्दजी ------------------------------------------ ४१६
जैन आगम और प्राकृत-भाषा विज्ञान के परि-प्रेक्ष्य में एक परिशीलन – श्रीमति
शान्तीदेवी जैन ------------------------------------------------------------------- ४२३
जैन न्याय के समर्थ पुरस्कर्ता-सिद्धसेन दिवाकर – देवेन्द्र मुनि शास्त्री ---------------------- ४३५
जैन योग के महान व्याख्याता-हरिभद्र सूरि – प्रो. सोहनलाल पटनी ------------------------- ४४०
जैन आगमों के भाष्य और भाष्यकार – श्री पुष्कर मुनि ---------------------------------- ४४३
आचार्य हेमचन्द्र-जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व – अभयकुमार जैन ------------------------- ४५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थान के प्राकृत श्वेताम्बर साहित्यकार – देवेन्द्र मुनि शास्त्री---------------------------- ४५६
राजस्थानी जैन साहित्यकार – रमेश कुमार जैन ------------------------------------------- ४६३
जैन आयुर्वेद साहित्य-एक समीक्षा – राजेन्द्र प्रसाद भटनागर-------------------------------- ४६८
जैन संस्कृति के प्रमुख पर्वों का विवेचन – श्री गोटूलाल मांडावत --------------------------- ४७६
पंचम खण्ड – इतिहास और परम्परा
जैन परम्परा - एक ऐतिहासिक यात्रा
यौगलिक युग ----------------------------------------------------------------------- ४८५
तीर्थंकर युग ------------------------------------------------------------------------ ४८५
भगवान ऋषभदेव ----------------------------------------------------------------- ४८६
भगवान शान्तिनाथ ---------------------------------------------------------------- ४८९
भगवान अरिष्टनेमि ----------------------------------------------------------------- ४९०
भगवान नेमिनाथ के धर्मशासन के कुछ दिव्यरत्न – गजसुकुमार, ढंढणमुनि,
थावच्चापुत्र ------------------------------------------------------------------ ४९२
भगवान पार्श्वनाथ ------------------------------------------------------------------ ४९३
भगवान महावीर ---------------------------------------------------------------------- ४९४
केवलिकाल
प्रधान शिष्य श्री इन्द्रभूति गौतम ----------------------------------------------------- ५१२
भगवान महावीर के प्रथम पट्टधर आर्य सुधर्मा ----------------------------------------- ५१४
वैराग्य रत्नाकर श्री जम्बूस्वामी ------------------------------------------------------ ५१५
पूर्वधर काल
श्री प्रभव स्वामी -------------------------------------------------------------------- ५१९
आचार्य शय्यंभव ------------------------------------------------------------------- ५१९
आचार्य श्री यशोभद्रस्वामी ------------------------------------------------------------ ५२०
आचार्य श्री संभूतिविजय ------------------------------------------------------------ ५२१
आचार्य श्री भद्रबाहु ------------------------------------------------------------------ ५२१
आचार्य श्री स्थूलभद्र ----------------------------------------------------------------- ५२१
आचार्य महागिरि --------------------------------------------------------------------- ५२३
आचार्य सुहस्ति ---------------------------------------------------------------------- ५२३
आचार्य बलिस्सह --------------------------------------------------------------------- ५२३
आर्य इन्द्रदिन्न ----------------------------------------------------------------------- ५२३
आर्य आर्य दिन्न ---------------------------------------------------------------------- ५२३
आर्य वज्रस्वामी ----------------------------------------------------------------------- ५२३
आर्य वज्रसेन ------------------------------------------------------------------------ ५२४
आर्य रथ ----------------------------------------------------------------------------- ५२४
आर्य मुखगिरि ------------------------------------------------------------------------ ५२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिगम्बर मत का उदय ------------------------------------------------------------ ५२४
आर्य फल्गुमित्र ------------------------------------------------------------ ५२५
आचार्य रक्षित ------------------------------------------------------------ ५२५
आर्य नागस्वामी ------------------------------------------------------------ ५२६
आर्य सढील अणगार ------------------------------------------------------------ ५२६
चैत्यवास-आचार शैथिल्य का पर्याय ------------------------------------------------------------ ५२६
आचार्य देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण ------------------------------------------------------------ ५२७
अवक्रमण युग ------------------------------------------------------------ ५२९
उत्क्रांति युग ------------------------------------------------------------ ५२९
लोंकाशाह का आलोक ------------------------------------------------------------ ५२९
स्थानकवासी परम्परा का अभ्युदय ------------------------------------------------------------ ५३२
श्री जीवराजजी महाराज ------------------------------------------------------------ ५३२
श्री धर्मसिंहजी महाराज ------------------------------------------------------------ ५३२
पूज्य श्री लवजी ऋषिजी ------------------------------------------------------------ ५३३
पूज्यश्री धर्मदासजी महाराज------------------------------------------------------------ ५३३
धर्मदासजी महाराज और मेवाड़-परम्परा ------------------------------------------------------------ ५३५
षष्ठ खण्ड-काव्य कुसुम
पूज्य प्रवर्तक श्री अम्बालालजी महाराज के स्मरणीय पद ------------------------------------------------------------ ५३७
पूज्य श्री नृसिंहदासजी महाराज की कुछ रचनाएं ------------------------------------------------------------ ५४३
पूज्यश्री नृसिंहदासजी महाराज रचित-श्री रोड़जी स्वामी का गुण ------------------------------------------------------------ ५४८
पूज्य श्री मानजी स्वामी विरचित-पूज्य श्री नृसिंहदासजी महाराज के गुण ------------------------------------------------------------ ५५०
श्रावक चतुर्भुज द्वारा रचित-पूज्य श्री मानजी स्वामी के गुण ------------------------------------------------------------ ५५५
कविराज श्री रिषभदासजी महाराज के कुछ पद ------------------------------------------------------------ ५५६
रिषभदासजी महाराज कृत-तात्त्विक चर्चा ------------------------------------------------------------ ५५९
छोटी पट्टावली ------------------------------------------------------------ ५६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org